एक बिंदी
पीटर रेनॉल्ड

एक बिंदी

पीटर रेनॉल्ड

आर्ट क्लास ख़त्म हो चुका था.
लेकिन वाश्ती, अभी भी अपनी कुर्सी पर ही बैठी थी.
उसका कागज़ एकदम खाली था.

उसकी टीचर ने झुककर खाली शीट को देखा.

"अरे! तुमने बर्फीले तूफ़ान में कितना सुन्दर

ध्रुवीय रीछ (पोलर बेयर) बनाया है," उन्होंने कहा.

"अजीब बात है!" वाश्ती ने कहा.

"मुझे ड्राइंग बिल्कुल नहीं आती है!"

वाश्ती की टीचर मुस्कुराईं.

"चलो, सिर्फ एक बिंदी बना दो,

फिर देखो वो तुम्हें कहां ले जाती है."

फिर वाश्ती ने अपना मार्कर पेन लिया

और उसकी नोक को पकड़कर

उसने कसकर कागज़ पर मारा.

"वहां!"

टीचर ने वाश्ती का कागज़ उठाया

और बड़े ध्यान से उसे देखा.

"हूँ.....!"

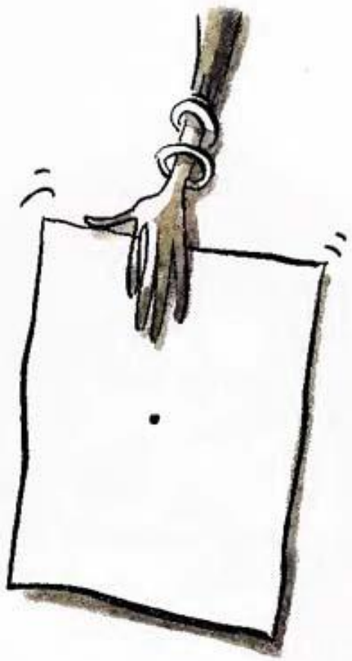

फिर उन्होंने वाश्ती को ड्राइंग दी,

और उससे हल्के से कहा,

"अच्छा, अब उस पर अपने हस्ताक्षर कर दो."

वाश्ती ने एक क्षण के लिए सोचा.

"हो सकता है मुझे ड्राइंग न आती हो,

पर मुझे अपने हस्ताक्षर करना ज़रूर आते हैं."

अगले हफ्ते जब वाशती आर्ट क्लास में गई
तो उसे देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी पेंटिंग
टीचर की मेज़ के ऊपर लटकी हुई थी.

पेंटिंग पर वही एक बिंदी थी - जो उसने बनाई थी!
उसकी पेंटिंग एक सुनहरे फ्रेम में जड़ी थी!

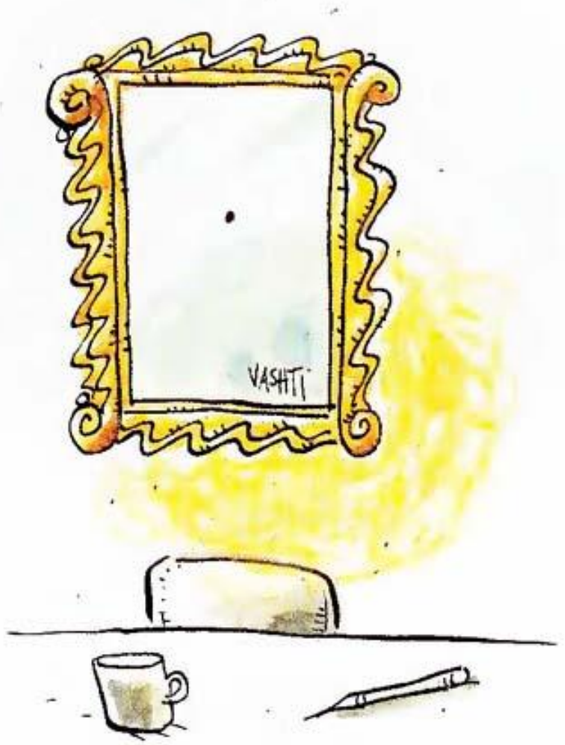

"अरे! मैं उससे कहीं बेहतर बिंदियां बना सकती हूँ!"

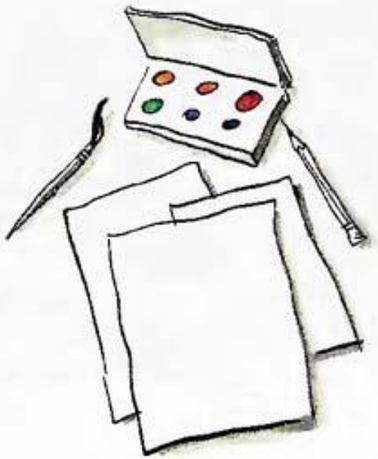

फिर उसने अपना वो पेन्ट-बॉक्स खोला

जो न जाने कब से बंद पड़ा था.

उसके बाद वो काम में लग गई.

वाश्ती ने तमाम बिंदियां बनाईं.

एक पीली बिंदी.

एक हरी बिंदी.

एक लाल बिंदी.

एक नीली बिंदी.

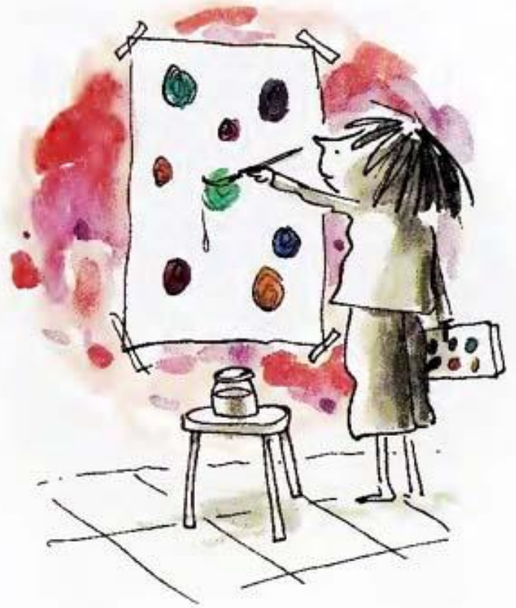

जब नीली बिंदी, लाल से मिली,

तब वाश्ती ने खोजा कि वो बैगनी रंग भी बना सकती थी.

वाश्ती बहुत से अलग-अलग रंगों की,

छोटी-छोटी बिंदियों के साथ खेलती रही.

"अगर मैं छोटी-छोटी बिंदियां बना सकती हूँ,
तो फिर मैं बड़ी-बड़ी बिंदियां भी बना सकती हूँ."

फिर वाश्ती ने बड़े ब्रश का इस्तेमाल करके
बड़े कागज़ पर बड़ी-बड़ी बिंदियां बनाईं.

वाश्ती ने एक बहुत बड़ी बिंदी बनाई,
लेकिन उसने उसे पेन्ट नहीं किया.

कुछ हफ़्तों बाद स्कूल की कला प्रदर्शनी में

वाशती की बिंदियों ने, लोगों की खूब वाह-वाही लूटी.

एक छोटे लड़के ने वाश्ती को घूरते हुए कहा,

"आप बहुत ही सुन्दर आर्टिस्ट हैं,

काश, मुझे भी ड्राइंग करना आती."

"तुम ज़रूर ड्राइंग कर सकते हो," वाश्ती ने कहा.

"मैं! नहीं, मुझे ड्राइंग नहीं आती है.

मैं स्केल की मदद से

एक सीधी लाइन तक नहीं बना सकता हूँ."

वाश्ती मुस्कुराई.

उसने लड़के को एक सादा कागज़ दिया और कहा,

"मुझे दिखाओ."

लाइन बनाते समय लड़के की पेंसिल कांप रही थी.

वाश्ती ने लड़के की टेढ़ी-मेढ़ी लाइन को गौर से घूरा.

फिर उसने कहा.....

"कृपा ..... उस पर अपने हस्ताक्षर कर दो."

अंत